संपादकीय

नयी पीढ़ी में घरेलू हुनर सीखने का ट्रेंड

बीते जमाने में सिलाई, कढ़ाई और बुनाई घरेलू जीवन और तहजीब का महत्वपूर्ण हिस्सा थीं। हाथ से बुने स्वेटर, घर में सिले कपड़े और अपनी रसोई में अपने हाथ से तैयार व्यंजन। लेकिन बदलती जीवनशैली, रेडीमेड बाजार और महिलाओं की व्यस्तता के कारण ये कौशल पीछे छूट गए। इन्हें आउट ऑफ फैशन मान लिया गया। अब नयी पीढ़ी में पर्यावरण बचाने, टिकाऊ फैशन और मानसिक सेहत के प्रति बढ़ती जागरूकता बढ़ रही है। इन्हीं वजहों से जेन-ज़ी फिर से ये स्किल्स सीख रही है। ये हुनर क्रिएटिविटी, आत्मनिर्भरता और तनाव से मुक्ति का जरिया भी बन रहे हैं। यह अप्रैल 2011 की बात है। स्विटजरलैंड में फ्रांस की सीमा से लगे, एक बड़े अस्पताल में खड़ी थी। क्या खूबसूरत दृश्य था। चारों ओर पहाड़ियां, हरियाली। अस्पताल भी किसी चमकते होटल सा। वहां रिसेप्शन पर एक बुजुर्ग महिला बैठी थीं। वह बड़ी-बड़ी सलाइयों से स्वेटर बुन रही थीं। उन्हें देखकर आश्चर्य हुआ कि क्या यूरोप के इस देश में अब भी लोग हाथ से बुने स्वेटर पहनते हैं, जबकि अपने देश में इनकी विदाई कब की हो गई। फिर 2021 में इसी देश के मोन्ट्रू शहर में हर साल होने वाले क्रिसमस के भव्य आयोजन को देखने गई। यहां के मेले में बहुत सी दुकानों पर हाथ से बुने वयस्क लोगों और बच्चों के टोपे, स्वेटर, नन्ही सी स्कर्ट व शाल आदि देखने को मिले। समझ में यह भी आया कि ये लोग अपनी किसी विरासत और कलाकारी को मरने नहीं देते। हमारे यहां आज से कुछ दशक पहले तक सारे कपड़े घरों में सिले जाते थे। बच्चों, स्त्रियों और बहुत से पुरुषों के कपड़े भी। उषा सिलाई मशीन के सिलाई सिखाने वाले स्कूल जगह-जगह चलते थे। छुट्टियों में लड़कियां यहां बड़ी संख्या में आती थीं। इन बहुत से स्कूलों में हाथ की और मशीन की कढ़ाई, बुनाई भी सिखाई जाती थी। विवाह के अवसर पर सिलाई मशीन देना अनिवार्य माना जाता था। यही हाल सर्दी के दिनों का था। जब अनेक दुकानें रंग-बिरंगी ऊनों से भर जाती थीं। महिलाएं इन्हें खरीदकर तरह-तरह के डिजाइन के स्वेटर बनाती थीं। कई महिलाएं तो शाल और चादर तक बुन लेती थीं, जबकि इन्हें बनाना बहुत कठिन माना जाता था। छोटी बच्चियों के लिए छोटी-छोटी सलाइयां मिलती थीं। घर की महिलाओं को देखते हुए, वे भी खेल-खेल में फंदे डालना, घटाना, बढ़ाना आदि सीख जाती थीं। लड़कियों के रिश्तों की बातें जब होती थीं, तब लड़के वालों की तरफ से दो बातें अवश्य पूछी जाती थीं-लड़कियां खाना बनाना जानती हैं कि नहीं, सिलाई कढ़ाई, बुनाई भी कर लेती हैं या नहीं। दरअसल ये वे काम माने जाते थे, जो गृहस्थी और घर की आर्थिकी को चलाने के लिए जरूरी थे। ये सारे काम स्त्रियों की कारीगरी, उनकी कल्पनाशीलता, इनोवेशन, घर की जरूरतों, परिवार वालों की पसंद-नापसंद आदि से भी जुड़े होते थे। कई महिलाओं को तो ऐसा भी देखा था कि वे बाजार जाती थीं, तो रास्ते में स्वेटर भी बुनती जाती थीं। यही नहीं, किसी ने अच्छी डिजाइन का स्वेटर पहन रखा है।

विनोद शर्मा, संपादक

सभ्यतागत स्मृति से भविष्य की प्रज्ञा तकः संस्कृत

संस्कृत को लेकर सबसे संतुलित शैक्षिक नीति यह होगी कि इसे किसी पर सांस्कृतिक पहचान के रूप में आरोपित करने के बजाय अवसर और विकल्प के रूप में व्यापक बनाया जाए। प्राथमिक स्तर पर सरल संस्कृत संभाषण और शब्द-संरचना, माध्यमिक स्तर पर व्याकरण एवं साहित्य, और उच्च शिक्षा में दर्शन, भाषाविज्ञान, गणित, आयुर्वेद, न्याय, साहित्य, कम्प्यूटेशनल संस्कृत तथा डिजिटल मानविकी जैसे अंतर्विषयी क्षेत्रों से इसका संबंध स्थापित किया जा सकता है।इस प्रकार संस्कृत ज्ञान-अनुसंधान की भाषा के रूप में पुनर्परिभाषित हो सकती है। यदि हम वैज्ञानिक दृष्टि से सोचते हैं, तो हमें संस्कृत के बारे में अतिरंजित दावों से बचना चाहिए। इसके बजाय अधिक मजबूत और प्रमाण-आधारित तर्क यह है कि संस्कृत एक विशाल प्राथमिक ज्ञान-संपदा, अत्यंत विकसित व्याकरणिक परंपरा, असाधारण मौखिक पाठ-संरक्षण प्रणाली, भारतीय दर्शन-साहित्य के मूल स्रोतों और आधुनिक भाषावैज्ञानिक एवं डिजिटल अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध कराती है।संस्कृत को ज्ञानभाषा के रूप में देखना अधिक व्यापक दृष्टि है।

लेखक- डॉ बृजेश कुमार साहू

क्या संस्कृत केवल अतीत की भाषा है, या भविष्य की बौद्धिक आवश्यकताओं से भी उसका कोई संबंध है? यह प्रश्न आज इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भाषा को अब केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि मानव-चिंतन, ज्ञान-संरचना, स्मृति, तर्क और सांस्कृतिक निरंतरता की आधारभूत प्रणाली के रूप में देखा जा रहा है। संस्कृत को सबके लिए सीखने की बात यदि केवल ÷हमारी प्राचीन भाषा है÷ या ÷हमारी संस्कृति की भाषा है के आधार पर की जाए, तो उसका तर्क सीमित हो जाता है। संस्कृत के पक्ष में अधिक गंभीर तर्क यह है कि यह भारतीय बौद्धिक परंपरा के एक विशाल ज्ञान-संसार तक प्रत्यक्ष पहुँच प्रदान करती है–और साथ ही भाषा की संरचना, व्याकरण, अर्थविज्ञान, तर्कशास्त्र तथा पाठ-संरक्षण की ऐसी परंपरा सामने रखती है, जिसका अध्ययन आधुनिक अकादमिक अनुशासनों के लिए भी आवश्यक है । संस्कृत की सबसे बड़ी विशेषता उसकी साहित्यिक प्राचीनता मात्र नहीं है। इसकी वास्तविक शक्ति उस व्यवस्थित भाषिक परंपरा में है जिसने ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य और अर्थ को अत्यंत सूक्ष्मता से विश्लेषित किया।आधुनिक औपचारिक भाषाविज्ञान और कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान के संदर्भ में पाणिनीय व्याकरण इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसमें भाषा के रूप-निर्माण और नियम-प्रयोग को अत्यंत संक्षिप्त एवं व्यवस्थित सूत्रों में अभिव्यक्त किया गया है। वैज्ञानिक सावधानी आवश्यक है। संस्कृत को ÷कंप्यूटर के लिए बनी भाषा÷ कहना अकादमिक रूप से

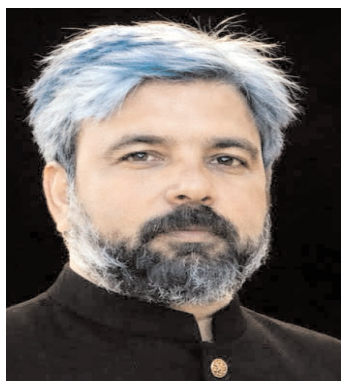

अतिरंजित होगा। वास्तविक तथ्य अधिक रोचक है–पाणिनीय व्याकरण औपचारिक भाषिक विश्लेषण का एक अत्यंत विकसित ऐतिहासिक उदाहरण है, जिसका आधुनिक भाषाविज्ञान में गंभीर अध्ययन हुआ है। संस्कृत के वैदिक स्वरूप का एक दूसरा महत्त्व उसकी मौखिक परंपरा में दिखाई देता है।वैदिक पाठों के संरक्षण के लिए विकसित विभिन्न पाठ-पद्धतियों–जैसे संहिता, पद, क्रम, जटा और घन पाठ–ने ध्वनि, उच्चारण, क्रम और स्वर की शुद्धता को पीढ़ियों तक संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।इसे केवल धार्मिक आस्था के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। यह मानव स्मृति, मौखिक संप्रेषण और त्रुटि-नियंत्रण की एक विशिष्ट सांस्कृतिक तकनीक के रूप में भी अध्ययन योग्य है।आधुनिक डिजिटल युग में जब सूचना का संरक्षण मुख्यतः सर्वर और डेटाबेस पर निर्भर है, तब यह प्रश्न भी प्रासंगिक है कि बिना लिखित माध्यम के किसी विशाल पाठ-संपदा को कितनी शुद्धता से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित किया जा सकता है। वैदिक मौखिक परंपरा इस प्रश्न का एक ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत करती है। संस्कृत का महत्त्व केवल व्याकरण तक सीमित नहीं है। भारतीय दर्शन की अनेक प्रमुख परंपराओं–न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त और बौद्ध-जैन दार्शनिक साहित्य–का विशाल हिस्सा संस्कृत में उपलब्ध है।इन ग्रंथों में केवल धार्मिक विश्वास नहीं हैं; इनमें प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, कारणता, आत्मा, चेतना, पदार्थ, भाषा, ज्ञान और सत्य जैसे प्रश्नों पर व्यवस्थित विमर्श मिलता है। इसलिए संस्कृत सीखना किसी व्यक्ति को केवल पुराने ग्रंथ पढ़ने की क्षमता नहीं देता; वह उसे भारतीय बौद्धिक इतिहास के प्राथमिक स्रोतों तक पहुँच प्रदान करता है।अनुवाद आवश्यक हैं, लेकिन अनुवाद मूल भाषा का पूर्ण विकल्प नहीं हो सकता। जैसे किसी वैज्ञानिक शोध-पत्र के अनुवाद से उसका आशय समझा जा सकता है, लेकिन तकनीकी शब्दावली और मूल संरचना का प्रत्यक्ष अनुभव अलग होता है; वैसे ही संस्कृत के मूल ग्रंथों में निहित अर्थ की अनेक परतें मूल भाषा के ज्ञान से अधिक स्पष्ट होती संस्कृत सीखने के कि इसकी जटिल व्याकरणिक संरचना सीधे मानव मस्तिष्क की तार्किक क्षमता, स्मृति या बुद्धि को बढ़ाती है। अधिक वैज्ञानिक निष्कर्ष यह है कि संस्कृत जैसी संरचनात्मक रूप से समृद्ध भाषा सीखने से विद्यार्थी को रूप-विज्ञान, वाक्य-संरचना, ध्वनि, शब्द-व्युत्पत्ति और नियम-आधारित विश्लेषण के साथ काम करने का अवसर मिलता है। यह भाषा-अध्ययन को एक प्रकार के बौद्धिक व्यायाम में बदल सकता है। सबको संस्कृत आनी चाहिए÷ का अर्थ यह नहीं होना चाहिए कि प्रत्येक भारतीय संस्कृत का विद्वान बने।जैसे प्रत्येक नागरिक को गणितज्ञ बनने की आवश्यकता नहीं, लेकिन गणितीय साक्षरता आवश्यक है; वैसे ही प्रत्येक नागरिक को संस्कृताचार्य बनने की आवश्यकता नहीं, लेकिन संस्कृत-साक्षरता भारतीय समाज के लिए उपयोगी हो सकती है। कम-से-कम तीन स्तरों पर इसकी कल्पना की जा सकती है

पहला—सांस्कृतिक साक्षरता।
भारतीय दर्शन, साहित्य, धर्म, कला, न्याय, व्याकरण और ज्ञान-परंपरा के मूल स्रोतों तक पहुँच।

दूसरा—भाषिक साक्षरता।
हिन्दी सहित अनेक भारतीय भाषाओं की शब्द-संपदा, व्युत्पत्ति और संरचना को अधिक गहराई से समझने की क्षमता।

तीसरा—बौद्धिक साक्षरता।
नियम, तर्क, विश्लेषण, अर्थ और भाषा की संरचना के प्रति संवेदनशीलता।

यहाँ संस्कृत सबको का लक्ष्य भाषायी एकरूपता नहीं, ज्ञान तक लोकतांत्रिक पहुँच होना चाहिए।संस्कृत को भारतीय भाषाओं के ऊपर स्थापित करना भी उचित नहीं होगा। भारतीय भाषाएँ स्वयं समृद्ध, स्वतंत्र और जीवंत भाषिक परंपराएँ हैं।संस्कृत का संबंध हिन्दी, मराठी, बंगाली, असमिया, उड़िया, नेपाली, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और अन्य भारतीय भाषाओं से अनेक ऐतिहासिक स्तरों पर जुड़ता है। इसलिए संस्कृत का अध्ययन भारतीय भाषाओं के बीच संबंधों को समझने का एक अतिरिक्त उपकरण बन सकता है ।

आत्मकथा का सच प्रमाण मांग सकता है, अनुमति नहीं

प्रो. आरके जैन अरिजीत

कुछ अनुभव उम्र के साथ धुंधले नहीं पड़ते, भीतर और गहरे उतरते हैं। मनुष्य उन्हें उसी नजर से लिखता है, जिस नजर से उसने जिया। सोनिया गांधी की आत्मकथा 'बिलॉन्गिंग- अ जर्नी ऑफ लव' पर उठी बहस इसी अधिकार की सीमा का सवाल है। कांग्रेस का आरोप है कि पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया ने मोदी, आरएसएस और चीन की सीमा से जुड़े अंश हटाने या बदलने को कहा। प्रकाशक का कहना है कि वह भारत में इस किताब का प्रकाशक नहीं है और तथ्य-जांच व संपादकीय सुझाव सामान्य प्रक्रिया हैं। दावे अलग हैं, लेकिन भारत में किताब का प्रकाशन फिलहाल रुका है। सवाल है–क्या लेखक की अपनी स्मृतियों को ऐसी कसौटी पर कसा जाना चाहिए, जो उसकी दृष्टि को अधूरा कर दे? संपादन की कैंची तथ्य पर चलनी चाहिए, स्मृति पर नहीं। प्रकाशक को संदर्भों की शुद्धता, तथ्यों की पड़ताल और कानूनी जोखिमों की जांच का पूरा अधिकार है। लेकिन आत्मकथा सरकारी फाइल का पुनर्लेखन नहीं, बल्कि जीवन को भीतर से देखी गई आंखों का बयान है। सोनिया गांधी ने मोदी से मुलाकातों, आरएसएस और चीन की सीमा से जुड़े प्रसंगों को जिस नजर से देखा, वह उनकी अपनी अनुभूति है। पाठक उसे अंतिम सत्य नहीं, एक व्यक्ति की गवाही मानकर पढ़ता है। तथ्य गलत हों तो सुधारे जाएं, संदर्भ अधूरे हों तो पूरे किए जाएं; पर केवल असुविधाजनक दृष्टि को हटा देना संपादन की सीमा से बाहर है। इतिहास की स्याही सिर्फ घटनाएं नहीं, उन्हें देखने वाली आंखें भी दर्ज करती है। गांधी की डायरियां, नेहरू की आत्मकथा और इंदिरा गांधी के पत्र इसलिए मूल्यवान हैं कि उनमें समय की धड़कन और लेखक की निजी दृष्टि साथ है। सीमाएं थीं, फिर भी यही अपूर्णता उन्हें जीवंत बनाती है। आत्मकथा का अर्थ अपने अनुभव को अपनी नजर से दर्ज करना है। ऐसे में पेंगुइन का कहना कि वह पुस्तक प्रकाशित करना चाहता था, पर सहमति नहीं बनी, सवाल छोड़ता है। 'इच्छा' और 'सहमति' के बीच कितनी दूरी हो कि लेखक की स्मृतियां भी संपादन के दायरे में आ जाएं? तथ्य-जांच प्रकाशक का अधिकार और दायित्व है, लेकिन लेखक की दृष्टि बची रहे–यह भी जरूरी है। राजनीति की बहस अक्सर अपनी-अपनी सुविधा का आईना लेकर शुरू होती है। कांग्रेस इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रश्न मानती है, जबकि भाजपा राजनीतिक दावों की तथ्य-जांच को जरूरी ठहरा सकती है। दोनों तर्कों में वजन है। लेकिन असली कसौटी दल नहीं, पाठक होना चाहिए। आत्मकथा न अंतिम सत्य है, न केवल इसलिए संदिग्ध कि लेखक राजनीति में रहा है। संस्मरण को प्रमाण से अलग पहचानने की समझ पाठक में है। उसे सहमत होने जितना ही असहमत होने का अधिकार भी है। लोकतंत्र की परिपक्वता इसी में है कि असहमति का जवाब शब्दों से दिया जाए, शब्दों को रोककर नहीं। किसी किताब की सबसे बड़ी परीक्षा उसके शब्द नहीं, उन्हें सुनने का समाज का साहस होता है। सोनिया गांधी की पुस्तक का सरोकार भारत की राजनीति और समाज से है, फिर भी उसके कुछ अंशों को लेकर भारत में ही अतिरिक्त सावधानी बरती जा रही है, जबकि वही सामग्री दुनिया के दूसरे हिस्सों में सामने आ सकती है। अंतरराष्ट्रीय संस्करण अल्फ्रेड ए. नॉफ (पेंगुइन रैंडम हाउस) से 10 नवंबर 2026 को प्रकाशित होगा और उसमें विवादित अंश रहने की संभावना है। भारत में हार्परकॉलिन्स समेत अन्य प्रकाशकों से बातचीत जारी है। इससे सवाल उठना स्वाभाविक है। किसी तथ्य पर संदेह हो तो प्रमाण से जवाब दिया जा सकता है, किसी दृष्टिकोण से असहमति हो तो दूसरा दृष्टिकोण रखा जा सकता है। पन्ने हटाने से बहस मिटती नहीं, अक्सर और गहरी होती है। बेहतर रास्ता यही है कि पाठक को पूरी बात देखने और अपना निष्कर्ष चुनने दिया जाए। लोकतंत्र आखिर नागरिकों की समझ पर भरोसे से ही मजबूत होता है। बीता हुआ समय किसी आदेश से अपना अर्थ नहीं बदलता। जो किसी ने जिया, उसकी स्मृति में वह उसी की अनुभूति के साथ बचा रहता है; इतिहासकार बाद में उसी घटना को दूसरे स्रोतों और दूसरी नजर से परख सकता है। दोनों सच अपने-अपने स्थान पर रह सकते हैं–यही इतिहास की जटिलता है। इसलिए आज जिन पन्नों पर बहस है, वे कल केवल सोनिया गांधी की यादें नहीं होंगे; वे 2026 के राजनीतिक माहौल की एक झलक भी देंगे। आने वाली पीढ़ियां शायद यह भी देखेंगी कि उस समय भारत अपने अतीत को कैसे याद करता था, किन शब्दों पर ठहरकर सोचता था और किन स्मृतियों को सार्वजनिक करने में कितना संकोच करता था।

ब्रह्माकुमारीज ने पुलिस लाइन में बांधा परमात्म रक्षा सूत्र

90 सुरक्षा कर्मियों ने लिया बुराइयों से दूर रहने का संकल्प

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

रक्षाबंधन के पावन पर्व के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज खंडवा द्वारा पुलिस लाइन में सुरक्षा कर्मियों के लिए विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज की ओर से पुलिसकर्मियों को परमात्म रक्षा सूत्र बांधकर उन्हें पवित्रता, सद्भावना एवं सकारात्मक जीवन का संदेश दिया गया। कार्यक्रम में बी.के. शक्ति दीदी ने रक्षाबंधन के आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रक्षा सूत्र केवल एक धागा नहीं, बल्कि स्वयं को बुराइयों से मुक्त करने और परमात्मा से जुड़कर जीवन को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प है। उन्होंने अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महेंद्र तारनेकर जी, डीएसपी अनिल चौहान एवं आरआई शिव मंगल सिंह लोधी जी को परमात्मा रक्षा सूत्र बांधा एवं ईश्वरीय सौगत भेट की। इसके पश्चात बी.के. शक्ति दीदी, बी.के. आरती दीदी एवं पावन बहन द्वारा पुलिस लाइन में उपस्थित लगभग 90 सुरक्षा कर्मियों को परमात्म रक्षा सूत्र बांधा गया। सभी सुरक्षा कर्मियों ने बड़े ही स्नेह और श्रद्धा के साथ रक्षा सूत्र बंधवाया तथा जीवन से बुराइयों को छोड़ने एवं सकारात्मक मूल्यों को अपनाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महेंद्र तारनेकर जी ने रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए ब्रह्माकुमारीज द्वारा बताए गए रक्षाबंधन के आध्यात्मिक संदेश की सराहना की। कार्यक्रम में संस्था से जुड़े बी.के. सुनील भाई, बी.के. दीपक भाई एवं बी.के.श्यामा भाई भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम ने सुरक्षा कर्मियों के बीच आध्यात्मिकता, पवित्रता और सकारात्मक जीवनशैली का संदेश प्रसारित किया।

खंडवा अलीराजपुर रेल लाइन की डीपीआर की राह खुली, आदिवासी अंचल के विकास को लगेंगे पंख

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

आजादी के पूर्व से आदिवासी क्षेत्र खरगोन और बड़वानी जिले के लोग अपने क्षेत्र में रेल देखने का इंतजार कर रहे हैं। इन क्षेत्र के आदिवासी भाई अपने बच्चों को लेकर कई बार हमने देखा है कि खंडवा के रेलवे और ब्रिज पर खड़े होकर में अपने बच्चों को आने जाने वाली ट्रेन दिखाते हैं उनका सपना है कि हमारे क्षेत्र रेलगाड़ी दौड़े और हम और हमारे बच्चे उसमें बैठे। अलीराजपुर-खंडवा रेल लाइन की वर्षों पुरानी मांग को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार द्वारा खंडवा से भीकनगांव, खरगोन, बड़वानी होते हुए अलीराजपुर तक ट्रेन चलाने की लाइन के सर्वे कार्य को स्वीकृति प्रदान कर लगभग 6 करोड़ से अधिक राशि स्वीकृत की गई थी, हर्ष का विषय है खंडवा से अलीराजपुर रेल लाइन का सर्वे कार्य पूर्ण होने के पश्चात पूर्ण हो गया है और सर्वे की डीपीआर केंद्र सरकार, रेल मंत्रालय और प्रदेश सरकार को भेजी जा चुकी है। समाजसेवी व प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि खंडवा अलीराजपुर रेल लाइन की व्हाट्सएप पुरानी अब आगे बढ़ती नजर आ रही है। प्रधानमंत्री कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार, बहुप्रतीक्षित रेल परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने की दिशा में प्रक्रिया तेज हो गई है। डीपीआर तैयार होने के बाद परियोजना के सर्वे, स्वीकृति और आगे की प्रक्रिया को गति मिलने की उम्मीद है। रेल लाइन बनने से आदिवासी बहुल अंचल सीधे खंडवा सहित बड़े शहरों और प्रमुख बाजारों से जुड़ सकेगा। साथ ही खंडवा जिले के लिए हर्ष का विषय है कि खंडवा के लोगों को गुजरात जाने के लिए 200 किलोमीटर का फायदा होगा।

रेल संपर्क से बदलेंगे विकास के रास्ते: समाजसेवी व प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि मोदी सरकार ने यदि इस लाइन का सर्वे कराया है तो निश्चित आने वाले समय में रेल लाइन की पटरी बीछकर क्षेत्रवासी रेल में बैठकर सफर करेंगे। अलीराजपुर से खंडवा के बीच रेल सुविधा शुरू होने से क्षेत्र में आवागमन आसान होगा। किसानों को अपनी उपज बड़े बाजारों तक पहुंचाने में सुविधा मिलेगी, वहीं विद्यार्थियों, नौकरीपेशा लोगों और व्यापारियों के के साथ गुजरात इलाज के लिए जाने वाले मरीज के लिए भी सफर सुगम होगा। रेल कनेक्टिविटी से रोजगार, व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यटन के क्षेत्र में नए अवसर बनने की उम्मीद है।

वर्षों पुरानी मांग को मिली नई उम्मीदः आदिवासी अंचल को रेल नेटवर्क से जोड़ने की यह मांग लंबे समय से उठती रही है। समाजसेवी व प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि खंडवा के दादाजी धाम पर दादाजी मंदिर निर्माण के साथी किलो जिले को जिले को बड़ी-बड़ी सौगातें प्राप्त होने लगी है, खंडवा अलीराजपुर रेल लाइन का सर्वे पूर्ण होकर डीपीआर भारत सरकार रेल मंत्रालय और प्रदेश सरकार को स्वीकृति हेतु भेजी गई है।

महापौर अमृता अमर यादव ने ग्राम सिहाड़ा में ग्रामीणों के साथ सुनी 'मन की बात'

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

नगर पालिक निगम खंडवा की महापौर अमृता अमर यादव ने रविवार को खंडवा विधानसभा के ग्राम सिहाड़ा में बूथ क्रमांक 66 पर माताजी मंदिर में ग्रामवासियों के साथ देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' के 137वें संस्करण का सामूहिक श्रवण किया। समाजसेवी व प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि इस अवसर पर महापौर अमृता अमर यादव ने ग्रामवासियों के साथ प्रधानमंत्री जी के प्रेरणादायी विचारों को सुना और कार्यक्रम में उपस्थित सभी नागरिकों से 'मन की बात' के माध्यम से दिए गए संदेशों को आत्मसात कर राष्ट्र निर्माण में अपनी सहभागिता निभाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे। सामूहिक श्रवण के दौरान राष्ट्रहित, जनभागीदारी और विकसित भारत के संकल्प को लेकर उत्साह का वातावरण रहा। महापौर श्रीमती अमृता अमर यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का 'मन की बात' कार्यक्रम देशवासियों को जोड़ने, प्रेरित करने और समाज में सकारात्मक बदलाव के लिए जनभागीदारी को बढ़ावा देने का सशक्त माध्यम है। प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि मन की बात कार्यक्रम में महापौर अमृता अमर यादव के साथ भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्रियांशु चौरे, सुनील जैन, सिंहाड़ा भाजपा कार्यकर्ता डॉ प्रणय श्रीमाली, मुकेश पाल, राजेंद्र राठौर, गोविंद मालाकार, डॉ सतीश पहारे, राजेश मालाकार, मुकेश मालाकार, सदाशिव मालाकार सहित युवा कार्यकर्ता,मातृ शक्ति उपस्थित रहे।

निशानेबाज आराध्य शर्मा प्री नेशनल खेलेंगे

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

स्टेट राइफल शूटिंग में मध्यप्रदेश परचम लहरा रहा है। 13वीं एमपी स्टेट और वेपंस गन फॉर ग्लोरी शूटिंग प्रतियोगिता में खंडवा और हरदा क्षेत्र के खिलाड़ियों ने जबलपुर में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा दिया। खंडवा वेपंस गन शूटिंग अकादमी से भी ट्रेनिंग ले रहे खिरकिया के आराध्य शर्मा ने दो गोल्ड मेडल और एक सिल्वर पदक जीते। आराध्या शर्मा का चयन प्री नेशनल प्रतियोगिता के लिए किया गया है। फिलहाल वे खंडवा के पास स्थित सूर्योदय ग्लोबल अकैडमी के विद्यार्थी हैं। प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश के 550 से अधिक युवा निशानेबाज पहुंचे थे। खंडवा का शानदार प्रदर्शन देखकर बड़े शहरों के लोग भी दंग रह गए। एनआरएआई के वाइस प्रेसिडेंट सुल्तान सिंह एवं ट्रेजरार श्रीपाद बांगले विशेष रूप से उपस्थित थे। समाजसेवी सुनील जैन ने बताया कि प्रतियोगिता में जबलपुर के बच्चों ने भी अच्छा प्रदर्शन किया। आराध्य शर्मा के उत्कृष्ट प्रदर्शन को सराहा गया। अतिथियों ने कहा कि इस खिलाड़ी को अब शार्प ट्रेनरों की ज्यादा जरूरत है।

अच्छा प्रदर्शन तो नेशनल खेलेंगे: सुनील जैन ने बताया कि जिन 550 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इसमें चयनित निशानेबाजों को आगामी प्री नेशनल एवं नेशनल प्रतियोगिताओं में मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिलेगा। इसीलिए जबलपुर में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। अंतरराष्ट्रीय निशानेबाज जयवर्धन सिंह राठौड़ जो केंद्रीय मंत्री भी रह चुके हैं।

स्वामी, भाग्यमीडिया पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक राजेश शर्मा द्वारा प्रदेश वॉच मीडिया ग्रुप 11 प्रेस काम्पलेक्स जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित कर, जी-11 प्रथम तल गोयल निकेत जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित, पिन-462011, संपादक : विनोद शर्मा, फोन नं. 0755-4512708, पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार सभी मामलों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा । RNI No. MPHIN/2016/68059